

(3) अचेतन (Unconscious) - फ्रायड के अनुसार मन का सबसे गहरा एवं बड़ा भाग अचेतन है। फ्रायड ने इसे मन

का सबसे महत्वपूर्ण भाग बताया है।

अचेतन का आविष्कार फ्रायड ने ही किया था चेतना से परे हो। हमारे कुछ अनुभव इस प्रकार के होते हैं जो न तो हमारी चेतना में होते हैं और न ही अर्द्धचेतन में। ऐसे अनुभव अचेतन में होते हैं। अचेतन

मन में रहने वाले विचार एवं इच्छाओं का स्वरूप कामुक, असामाजिक, नैतिक तथा अशुभ होता है। चूंकि ऐसी इच्छाएँ एवं विचारों को दिन-प्रतिदिन की जिन्दगी में पूरा करना सम्भव नहीं होता है, फलतः उनका

चेतन से हटाकर अचेतन में दमित कर दिया जाता है। जब वैसे इच्छाओं एवं विचारों को अचेतन में दमित कर दिया जाता है, तो वे अचेतन में जाकर समाप्त नहीं हो जाते हैं बल्कि योंही ढेर के लिए निष्क्रिय हो जाते हैं क्योंकि वहाँ काटे (ब्लूक) का कड़ा

प्रतिबंध रहता है जो ऐसी इच्छाओं को चेतन में आने से रोकता है। फलतः वे रूप बदलकर चेतन में प्रवेश कर जाती हैं।

स्वप्न, दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ, सम्झौत आदि कुछ प्रमुख अवसर हैं जहाँ अचेतन की अनुभूतियाँ चेतन में व्यक्त होती हैं। जैसे, किसी मित्र के घर पर यदि खाल या कलम या किताब छोड़कर

हम चले आते हैं तो फ्रायड के अनुसार आप में उस मित्र से पुनः मिलने की एक इच्छा रहती है जो अचेतन में होती है। वही इच्छा वेश बदलकर चेतन में (अर्थात् खाल या कलम या किताब मित्र के घर पर छोड़ देने के रूप में) व्यक्त हो रही है।

फ्रायड के अनुसार अचेतन अनुभूतियों एवं विचारों का प्रभाव हमारे व्यवहार पर चेतन तथा अर्द्धचेतन की अनुभूतियों और विचारों से अधिक होती है। यही कारण है कि फ्रायड ने अपने सिद्धान्त में अचेतन को चेतन एवं अर्द्धचेतन की तुलना में अधिक

महत्वपूर्ण एवं बड़ा आकार का बताया है। चेतन एवं अचेतन के आकार के स्वरूप की तुलना पानी में डूबे हुए बर्फ के एक विशाल खण्ड के ऊपरी हिस्सा या भाग के समान आकार में होता है तथा अचेतन बर्फ खण्ड के डूबे हुए बड़े

हिस्से के समान आकार में बड़ा होता है और जिस तरह से वह बड़ा खण्ड व्यक्ति को दिखाई नहीं देता है, वैसे अचेतन भी वही है।